ग्रामाभ्युदयादेव देशाभ्युदयः
गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
कृषि मौसम विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
पन्तनगर–263145 उधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड)
फोन नम्बरः 05944–233032

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा बुलेटिन, जनपद – नैनीताल

उपमहानिदेशक (कृषि मौसम विज्ञान), भारत मौसम विज्ञान विभाग, पुणे निदेशक, मौसम केन्द्र, देहरादून

वर्षः 28 अंकः 40 बुलेटिन अवधिः : 18 – 22 मई, 2019 दिनः शुक्रवार दिनाँकः 17 मई, 2019

मौसम पूर्वानुमानः

भारत सरकार के **पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय** द्वारा वित्त पोषित एवं **भारत मौसम विज्ञान विभाग** द्वारा संचालित ग्रामीण कृषि मौसम सेवा परियोजना के अन्तर्गत **राष्ट्रीय मौसम पूर्वानुमान केन्द्र, भारत मौसम विज्ञान विभाग, मौसम भवन, नई दिल्ली** द्वारा पूर्वानुमानित तथा **मौसम केन्द्र, देहरादून** द्वारा संसोधित पूर्वानुमानित मध्यम अवधि मौसम आँकड़ों के आधार पर कृषि मौसम विज्ञान विभाग में स्थित कृषि मौसम विज्ञान प्रक्षेत्र इकाई (AMFU), गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर द्वारा **नैनीताल जिले के पर्वतीय व मैदानी क्षेत्रों में अगले पाँच दिनों** में निम्न मौसम रहने की संभावना व्यक्त की जाती है :–

पूर्वानुमानित मौसम तत्व	मौसम पूर्वानुमान – नैनीताल				
	18/05/2019	19/05/2019	20/05/2019	21/05/2019	22/05/2019
वर्षा (मिमी0)	5	3	0	0	2
अधिकतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	24	23	24	25	26
न्यूनतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	11	12	12	13	14
बादल आच्छादन	घने बादल	मध्यम बादल	आंशिक बादल	आंशिक बादल	मध्यम बादल
अधिकतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	85	85	75	75	75
न्यूनतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	45	45	35	35	35
वायु की औसत गति (कि0मी0 प्रतिघंटा)	008	006	008	008	008
वायु की दिशा	उत्तर–पश्चिम	उत्तर–उत्तर–पश्चिम	उत्तर–पश्चिम	उत्तर–पश्चिम	उत्तर–पश्चिम

भारत मौसम विज्ञान विभाग के नैनीताल स्थित मौसम विज्ञान वेधशाला (समुद्रतल से ऊँचाई–2084 मीटर) के प्रेक्षणानुसार विगत सात दिनों (10 – 16 मई, 2019) में आसमान साफ रहने के साथ मध्यम से घने बादल छाये रहे तथा अधिकतम तापमान 21.9 से 28.6 डि0से0 एवं न्यूनतम तापमान 11.0 से 14.8 डि0से0 के बीच रहा। ऐसे अनुमानित मौसम में गो0ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर के वैज्ञानिकों द्वारा इस क्षेत्र के कृषक भाइयों को सलाह दी जाती है कि इस मौसम में विभिन्न फसलों के लिए खेतों में निम्नानुसार कार्यक्रम अपनायें।

कृषि मौसम परामर्श

फसल	अवस्था	कृषि मौसम सलाह समिति द्वारा किसानो हेतु कृषि सलाह
धान	बुवाई की तैयारी	गेहूँ की मढ़ाई के बाद धान की बुवाई के लिए गहरी जुताई एवं मेड़बन्दी करे।
लोबिया व फ्रासबीन	–	लोबिया व फ्रासबीन मे पौधे सूखने की स्थिति मे, कार्बन्डाजिम 1 ग्राम/ली0 पानी की दर से जड़ो की सिंचाई करे तथा सफेद सड़न रोग की रोकथाम हेतु कार्बन्डाजिम 500 ग्राम/है0 की दर से छिड़काव करे।
शरद एवं बसंतकालीन गन्ना	–	मैदानी क्षेत्रों में, शरद एवं बसंतकालीन गन्ने की सिंचाई, खरपतवार एवं पोषक तत्वो का प्रबन्धन ठीक प्रकार से करे। मैदानी क्षेत्रों में, बसंतकालीन गन्ने में खरपतवार के नियंत्रण हेतु बुवाई के तीन दिन के अंदर या 15–20 दिन पर 2–3 पत्ति अवस्था में वैलपार के–4 की 2 कि0ग्रा0 मात्रा को 800 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। गन्ने में निराई–गुड़ाई के उपरांत सिंचाई के बाद नत्रजन का प्रयोग करें।
चारा फसल	–	चारा फसलो में सिंचाई के उपरान्त नत्रजन का प्रयोग करे जिससे अत्यधिक चारा प्रयोग किया जा सके।
प्याज व लहसुन	–	यदि प्याज व लहसुन की फसल तैयार हो गयी है तथा इनकी पत्तिया जमीन की सतह पर गिरनी प्रारंभ हो गई हों तो फसल में सिंचाई करना बंद करें तथा आने वाले 15–20 दिनों में फसल की खुदाई करें। देर से बोई गई प्याज की फसल मे पत्ती झुलसा रोग के नियंत्रण हेतु टेबुकोनाजोल या डिफिनोकोनाजोल या प्रोपीकोनाजोल का 500 मिली0 प्रति है0 की दर से किसी सर्वांगी कीटनाशी एवं स्टीकर के साथ मिलाकर छिड़काव करे।
शिमलामिर्च, बैंगन, टमाटर, मिर्च	रोपाई	मध्यम व उँचे पर्वतीय क्षेत्रो मे पॉलीहाउस मे शिमलामिर्च, बैगन की पौध का रोपण करें तथा आवश्यकतानुसार सिंचाई करें। टमाटर व मिर्च मे पत्तियो पर धब्बे दिखाई देने पर मैन्कोजेब 2.5 ग्राम/ली पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करे।
उद्यान प्रबन्ध	–	मध्यम तथा ऊँचें पर्वतीय क्षेत्रो में नमी की उपलबधता बनाये रखने हेतु सिचाई अथवा पलवार का प्रयोग करे। सूर्य की तीव्र या तेज किरणो से फल पेड़ो के तने पर बचाव के लिए पेड़ के तनो पर नीला थोता मिश्रित चूने का (नीला थोता 1 किग्रा, चूना 30 किग्रा, आधा लीटर अलसी का तेल 100 ली0 पानी में मिलाकर) प्रयोग करे।
पशुपालन	–	गर्मी से बचाने हेतु पशुओं को संतुलित आहार जिसमें सभी पोषक तत्व प्रोटीन, वसा, कार्बोहाइड्रेट, खनिज लवण तथा विटामिन्स उचित मात्रा एवं उचित अनुपात में उपस्थित हों, देवें। सूखे चारे के साथ हरा चारा एवं दाना अवश्य दें। इस गर्मी के दिनों में पशुओं के लिए पानी की उचित व्यवस्था करें। पीने के पात्र को साफ रखना चाहिए और दिन के समय पशुओ को कम से कम चार बार पानी जरूर पिलाये।

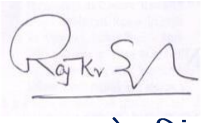

डा0 आर0 के0 सिंह
प्राध्यापक एवं प्रिंसिपल नोडल अधिकारी
ग्रामीण कृषि मौसम सेवा,
गो.ब. पन्त कृषि एवं प्रौद्यो. विश्वविद्यालय, पन्तनगर